चरित्र सुधारने की मेहनत करो

घर वापिस चलना बाप को याद करो

पावन बनने की करो तुम मेहनत

कर्मातीत हो कर ही है घर जाना

कलयुग लाखों वर्ष का समझना है अज्ञानता

ज्ञान के नेत्र है तो नेत्रहीन होने से बचना

चरित्र सुधारना,लोभ मोह कोई भी भूत

की करनी नही प्रवेशता

आप समान बनाने की मेहनत से सेवा करना

पवित्रता से उसकी फांउडेशन को पक्का करना

ब्रह्मचर्य से पवित्र बनना है कॉमन बात

संकल्प शुद्ध,ज्ञान स्वरुप,शक्ति स्वरुप

हो सम्पूर्ण पवित्र बनना

दृष्टि में हो रहम की भावना

अपमान और अभिमान ख़त्म हो

जब मन में हो शुभ भावना

मेरा बाबा

ॐ शांति!!